कौशाम्बी के प्रमुख दर्शनीय स्थल

अपनी ऐतिहासिक विषेषता के लिए प्रसिद्ध कौशाम्बी जनपद पर्यटन की दृषिट से भी मील का पत्थर साबित हो रहा है। अनेकों पौराणिक दर्षनीय स्थलों की पावन भूमि अपनी अमिट छाप छोड़ रही है।
भगवान बुद्ध इस स्थान पर अपना चार महीने का सबसे पवित्र (वर्षावास) समय बिताने आया करते थे। इस बिहार में महात्मा वुद्ध व उनके षिष्यों के रहने के लिए आलीषान कमरे, स्नानगृह सहित तमाम सुविधाएं थीं। इलाहाबाद विष्वविधालय की ओर से हुई खुदाई में स्तूप के साथ-साथ बिहार के ध्वंसावषेष मिले हैं।

अषोक स्तम्भ स्थल :- घोषिता राम विहार के पास ही अषोक स्तम्भ सथल व एक पुरानी बस्ती के अवषेष मिले हैं। सम्राट अषोक ने कलिंग विजय के बाद कौशाम्बी में अपना डेरा डाला था। इसी स्थान पर अषोक ने एक स्तम्भ की स्थापना की। खुदाई के दौरान स्तम्भ के ऊपर तीन सिंहों से जुड़ी आकृति मिली। इसे इलाहाबाद के मिंटो मार्क में स्थापित कराया गया। बाद में यही भारत का राजचिन्ह बना। प्राचीन बस्ती के अवषेष आज भी मिलते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास की ससुराल-महेवाघाट :- रामचरित मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास की ससुराल यमुना किनारे महेवाघाट में है। पत्नी प्रेम में बेकरार तुलसीदास बरसात के दिनों में भरी यमुना को एक शव के सहारे पारकर अपनी ससुराल आए थे। यहीं उनको पत्नी रत्नावली ने जो षिक्षा दी उससे तुलसीदास को 'रामचरित मानस जैसे महान ग्रन्थ को खिलने की प्रेरणा मिली। महेवा में आज भी रत्नावली के नाम से एक स्मारक विधमान है।

कौशाम्बी के जैन मनिदर :- जैन समुदाय के लोग मानते हैं कि भगवान श्रीकृष्ण उनके अनितम तीर्थंकर हैं। उनका दावा है कि श्रीकृष्ण ने अपना अंतिम समय कौशाम्बी में ही गुजारा है। कौषाम्बी में एक बहेलिया के तीर का षिकार बनकर उन्होंने दुनिया को अलविदा कहा। मनिदर में बांके बिहारी के पदचिन्ह बताये जाते हैं।

पभोषा पहाड़ :- जैन समुदाय के छठें तीर्थंकर भगवान पदम प्रभु के जन्म, कर्म व समाधि स्थल का गवाह पभोषा का पहाड़ है। इस अलौकिक पहाड़ पर सिथत गुफाएं आज भी ढेरों रहस्य समेटे हुए हैं। चांदनी रात में पहाड़ का सौंदर्य मनभावन हो जाता है।

पभोषा मनिदर :- पभोषा पहाड़ के नीचे आधुनिक काल में बना जैन मनिदर आकर्षण के केन्द्र में है। इसमें भगवान महावीर को आहार देती गणनी चन्दना की मूर्ति आकर्षित करती है। मनिदर परिसर में धर्मषाला भी है। इसमें देष विदेष से जैन धर्मावलम्बी आकर ठहरते हैं।

कड़ा का किला :- कन्नौज के राजा जयचन्द्र ने कड़ा में गंगा नदी के किनारे मिटटी का ऐसा किला बनवाया जिसके निषान आज भी पूरे जीवन्त रूप में मिलते हैं। इसी दौर में रहस्यमय इस किले से अनगिनत सबूत लगातार मिलते रहते हैं। गंगा की गोद में हर साल में इसका कुछ न कुछ अंष समा जाता है। इसके बाद भी किला पूरी शान से कड़ा के स्वर्णिम इतिहास को बता रहा है।

संदीपन आश्रम :- भगवान श्रीकृष्ण के गुरू संदीपन का आश्रम कोखराज के पास गंगा नदी के किनारे है। गंगा के इस घाट को संदीपन घाट के नाम से जाना जाता है। इसी आश्रम में श्रीकृष्ण, सुदामा सहित अपने तमाम षिष्यों को षिक्षा दी थी।

पुरखास के दादामियां की मजार :- पुरखास में दादामियां की दरगाह जिले के पवित्र स्थलों में से एक मानी जाती है। बाबा के चाहने वाले देष-विदेष में हैं। साल में एक बार लगने वाले उर्स के दौरान हजारों आस्थावान बाबा की दरगाह पर सिजदा करते हैं। इस पवित्र स्थल का बड़ा महत्व है।

संत मलूकदास :- मध्ययुग के प्रख्यात संत मलूकदास ने कड़ा में जन्म लिया था। उनकी जन्म, कर्म व समाधि स्थली कड़ा में ही है। संत मलूकदास ने इस्लामी आक्रमण के दौरान अपने संदेषों व षिक्षाओं से समाज को नई दिषा दी थी। उनके प्रभाव को इस्लामी शासक भी मानते थे। साल में एक बार समाधि स्थल पर लगने वाले मेले में संत मलूक के भक्त देष-विदेष से आते हैं।

मां शीतला का मनिदर :- देष की 51 शकितपीठों में से एक शीतला धाम का पौराणिक इतिहास में एक अलग ही महत्व है। सती का कर कड़ा में गिरा था। उन्हीं के नाम से कड़ा का नामकरण हुआ। आज भी जलहरी के भीतर सती के कर का चिन्ह मौजूद है। पूरे साल मनिदर में भक्तों का जमावड़ा लगा रहता है। मां के धाम में मांगी गयी सभी मन्नते पूरी होती है।

<u>नाम-जानकी मनिदर बजहा :-</u> जी0टी0 रोड पर इमामगंज से दो किमी0 की दूरी पर राम जानकी का भव्य व आधुनिक मनिदर है। इसे एक स्थानीय भक्त ने बनवाया है। मनिदर की भव्यता देखते ही बनती है। इसमें दर्षन पूजन के लिए हर समय भक्तों का जमावड़ा रहता है।

<u>काड़ी बाग :-</u> जैनियों की मान्यता है कि प्रलय के दौरान कुछ जगहों से अपार जल राषि निकलेगी, इससे पूरा जहांन पानी से भर जायेगा और पृथ्वी का निषान मिट जायेगा। ऐसा ही एक स्थान कड़ा शीतला घाम के पीछे है। जैनी इसे कांड़ीबाग कहते हैं। यहां भैरवबाबा का प्राचीन मनिदर है।

<u>सेलरहा के बरम बाबा :-</u> मंझनपुर-सिराथू रोड पर सेलरहा पषिचम गांव में बरम बाबा का पवित्र स्थान है। इस स्थान पर सुदूर जिलों से हर सोमवार को हजारों श्रद्धालु आते हैं। बरम बाबा के स्थान पर मांगी गयी मुरादें पूरी होती हैं। लोग रोते हुए बाबा के धाम आते हैं और मुस्कराते हुए जाते हैं।